The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 10 | October 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

नारी शिक्षा की दिशा में साबित्रीबाई फुले के योगदान का अध्ययन

सरिता सिंह

शोध छात्रा, शिक्षक शिक्षा बिभाग, टी. डी. पी. जी. कॉलेज, जौनपुर

प्रो० श्रद्धा सिंह

शोध–निर्देशकए शिक्षक शिक्षा बिभाग, टी. डी. पी. जी. कॉलेज, जौनपुर

Email:- singhsaritaonline@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17637488

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 26-10-2025

Published: 10-11-2025

Keywords:

सावित्रीबाई फुले, स्त्री शिक्षा, सावित्रीबाई फुले के सामाजिक कार्य, महिला सशक्तिकरण।

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध पत्र में सावित्रीबाई फुले द्वारा महिलाओं की शिक्षा और समाज–सुधार में योगदान का अध्ययन किया गया है। भारत की पहली महिला अध्यापिका और समाज सुधारक सावित्रीबाई फुले का पूरा जीवन महिला अधिकारों के लिये समर्पित रहा है। महिला सशक्तिकरण के काम करने के दौरान उन्हें कठिन संघर्ष का सामना करना पड़ा लेकिन सावित्रीबाई फुले ने महिलाओं को शिक्षित करने के लिये अथक प्रयास किया और समाज में व्याप्त कुरीतियों जैसे कन्या, शिशु हत्या, बाल–विवाह, सती प्रथा, छुआ –छूत आदि के खिलाफ आवाज उठाई। यह शोध उनके विचारों की प्रासंगिकता का विश्लेषण करने के लिए नारीवादी, उत्तर – औपनिवेशिक और आलोचनात्मक शिक्षाशास्त्र सहित कई सैधान्तिक दृष्टिकोण पर आधारित है। उनका दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा समाज के हाशिये पर पड़े और उत्पीडित वर्गों, विशेषकर महिलाओं के उत्थान और लैंगिक समानता के लिए एक शक्तिशाली उपकरण है। निष्कर्ष यह निकलकर आया कि सावित्रीबाई फुले जैसी महान समाजसेविका के बारे में अधिकांशतः लोग अनभिज्ञ है, उनके जीवन से सम्बन्धित, कृतित्व से सम्बन्धित पुस्तकों, पाठ्य सामग्री की कमी है जिसकी अनुभूति शोध छात्रा को इस लघुशोध को प्रस्तुत करने के समय हुई।

प्रस्तावना –

शिक्षा एक सतत् और व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसका अर्थ है ज्ञान, अनुभव एवं कौशल और सकारात्मक दृ ष्टिकोण का अर्जन। यह व्यक्ति को परिस्कृत एवं सभ्य और शिक्षित बनाती है तथा समाज के विकास में महत्वपूर्ण

भूमिका निभाती है। विभिन्न विचारकों के अनुसार शिक्षा शारीरिक एवं मानसिक और आध्यात्मिक गुणों के सामंजस्य पूर्ण विकास की प्रक्रिया है, जो व्यक्ति को जीवन की समस्याओं का समाधान करने में सक्षम बनाती है। शिक्षा हमें समाज की समस्याओं के समाधान के लिए कर्मठता एवं संगठनशीलता और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना प्रदान करती है। शिक्षित लोग समाज में सक्रिय भूमिका निभाने में सक्षम होते हैं और सामाजिक उद्धार के लिए योगदान करते हैं। व्यक्तिगत सुख शिक्षा हमें ब्यक्तिगत सुख की प्राप्ति के लिये मदद करती है किसी भी देश के विकास के लिए नारी शिक्षा अत्यंन्त महत्वपूर्ण है। बालिकाओं और महिलाओं को उचित संसाधन उपलब्ध कराना आवश्यक है ताकि वे शिक्षा प्राप्त कर सकें। बालिकाओं और महिलाओं में अपने देश के आर्थिक विकास में योगदान देने की क्षमता होती है। वे अपने परिवार के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

नारी हमारे समाज की आधार है। यह आवश्यक है कि हम अपने समाज के आधार को मजबूत करें। इसलिए नारी को शिक्षित करना बहुत आवश्यक है। हमारे भारतीय समाज में नारियों की दशा वेहद दयनीय थी। शिक्षा के अभाव में वह एक वस्तु या पशु के समान प्रतीत होती थी। जो दिन–रात पशुओं की भांति खटती थीं या एक कोने में वस्तु के समान पड़ी रहती थी। उनकी यह दयनीय दशा बहुत से समाज सुधारकों को झकझोरना शुरु किया।

सावित्रीबाई फुले जो कि ज्योतिबाराव फुले की धर्म पत्नी थी उन्होंने नारी को शिक्षित करने का प्रण ले लिया था। सावित्रीबाई फुले भारत की प्रथम महिला शिक्षिका समाज सुधारिका एवं मराठी कवियत्री थीं। उन्होंने अपने पति ज्योतिबाराव फुले के साथ मिलकर स्त्री अधिकार एवं शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किए। उन्हें आधुनिक मराठी काव्य का अग्रदूत माना जाता है। 1852 में उन्होंने बालिकाओं के लिए एक विद्यालय की स्थापना की।

जीवनवृत्त–

सावित्रीबाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 को महाराष्ट्र के सतारा जिले के नायगाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम खन्दोजी नैवेसे और माता का नाम लक्ष्मी था। इनका जन्म एक दलित परिवार में हुआ था। इनका विवाह 1840 में ज्योतिराव गोविंदराव फुले से हुआ था। सावित्रीबाई फुले ने महिलाओं एवं दलित जातियों को शिक्षित करने का अथक प्रयास किया और काफी हद तक सफल भी रहीं। सावित्रीबाई फुले भारत के पहले बालिका विद्यालय की पहली प्रिंसिपल और पहले किसान स्कूल की संस्थापिका रहीं। इनके जीवन के कुछ महत्वपूर्ण उद्देश्य थे जिनके लिए ही वो जीती थी, जैसे–विधवा विवाह करवाना, छुआछूत मिटाना, महिलाओं की मुक्ति और दलित महिलाओं को शिक्षित बनाना।

सावित्रीबाई फुले के जीवन के उद्देश्य को पूर्ण करने में बहुते सी बाधाएं आईं। हर रोज उन्हें नई–नई मुश्किलों का सामना करना पड़ता था। वे स्कूल जाती थी तो लोग उनपर पत्थर मारते थे। उन पर गंदगी फेंक देते थे। सावित्रीबाई फुले एक साड़ी अपने थैले में लेकर चलती थीं और स्कूल पहुँच कर गंदी कर दी गई साड़ी बदल

लेती थीं। अपने पथ पर चलते रहने की प्रेरणा बहुत अच्छे से देती थीं। उन्होंने हर बिरादरी और धर्म के लिए कार्य किया।

कृतित्व –

5 सितंबर 1848 में पुणे में अपने पति के साथ मिलकर विभिन्न जातियों की नौ छात्राओं के साथ उन्होंने महिलाओं के लिए एक विद्यालय की स्थापना की। एक वर्ष में सावित्रीबाई और उनके पति महात्मा फुले पांच नए विद्यालय खोलने में सफल हुए। तत्कालीन सरकार ने इन्हें सम्मानित भी किया। एक महिला प्रिंसिपल के लिए सन् 1848 में बालिका विद्यालय चलाना कितना मुश्किल रहा होगा, इसकी कल्पना शायद आज भी नहीं की जा सकती। लड़कियों की शिक्षा पर उस समय सामाजिक पाबंदी थी। सावित्रीबाई फुले उस दौर में न सिर्फ पढ़ी, बल्कि दूसरी लड़कियों के पढ़ने का भी बंदोबस्त किया।

शिक्षा के प्रति सावित्रीबाई फुले का दार्शनिक दृष्टिकोण सामाजिक न्याय, समानता और सशक्तिकरण के सिद्धान्तों में गहराई से निहित है। उनका शैक्षिक विचार सामाजिक हासिए पर होने, भेदभाव और उत्पीड़न उनके अनुभवों के साथ–साथ सामाजिक सुधार और मुक्ति के प्रति उनकी प्रतिबद्धता से प्रेरित था, उनका मानना था कि शिक्षा व्यक्ति और समाज को अज्ञानता और असमानता के बंधनों से मुक्त कराने की एकमात्र कुँजी है।

10 मार्च 1897 को प्लेग के कारण सावित्रीबाई फुले का निधन हो गया। प्लेग महामारी में सावित्रीबाई प्लेग के मरीजों की सेवा करती थीं। एक प्लेग के छूत से प्रभावित बच्चे की सेवा करने के कारण इनको भी छूत लग गया और इसी कारण से उनकी मृत्यु हो गई।

उपरोक्त पंक्तियों से स्पष्ट होता है कि समाज सुधारिका सावित्रीबाई फुले ने नारी शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके इस कार्य में अनेक बाधाएं उत्पन्न हुईं परन्तु उनका आत्मविश्वास अडिग रहा और नारी शिक्षा की ओर निरन्तर प्रयत्नरत रहीं। सामाजिक बाधाएं, पारिवारिक बाधाएँ, निजी बाधाएँ प्रतिदिन उत्पन्न होती थीं, परन्तु इनके हौसले हमेशा बुलन्द रहते थे। सावित्रीबाई फुले के पति ने साथ छोड़ा, परिवार ने साथ छोड़ा, परन्तु उनके हौसलों ने साथ नहीं छोड़ा।

"स्वाभिमान से जीने के लिए पढ़ाई करो,

पाठशाला ही इंसानों का सच्चा गहना है

सावित्री बाई फुले

निष्कर्षः–

नारी शिक्षा से बौद्धिक विकास प्राप्त होगा जिससे समाज के व्यवहार में सरसता आएगी। मानसिक और नैतिक शक्ति के विकास में महिलाएँ पुरुषों का सम्पूर्ण योगदान दे रही है। एक शिक्षित नारी गृहस्थ–जीवन में शांति और खुशहाली का श्रोत होती है। नारी शिक्षा. हमारे संस्कृति के उर्जा और विकास का संचार है।

एक बेटी शिक्षित होती है तो वह शिक्षा का उपयोग अपने पूरे परिवार को साक्षर बनाने व उसके हित के लिए करती है। शिक्षा के कारण ही वह स्वयं के अधिकारों को सुरक्षित करती है और स्वयं को सक्षम बनाती है। आज की शिक्षित बेटी ही कल की कुशल गृहिणी (नारी) है। नारी शिक्षित होगी तो वह अपने परिवार की समस्याओं का समाधान स्वयं कर सकती है। इससे परिवार आसानी से चलता रहेगा। नारियों की भागीदारी से देश का आर्थिक विकास और सकल घरेलू उत्पादन बढ़ जाता है। नारी की शिक्षा गरीबी पर नियंत्रण करने का प्रभावी उपाय है। इसके साथ ही घरेलू हिंसा व सामाजिक अत्याचार का शिकार होने वाली नारी यदि शिक्षित होंगी, तो वह इस तरह की घटनाओं पर अपनी सक्षमता से नियंत्रण पा सकेगी। संतान की पहली गुरु उसकी माँ होती है। अतः स्त्री की शिक्षा का असर स्वयं के साथ–साथ परिवार समाज व देश की पीढ़ी पर पड़ेगा। सावित्रीबाई फुले, अहिल्याबाई होलकर, कल्पना चावला जैसी स्त्रियों का योगदान ही स्त्री शिक्षा के प्रभाव का सर्वोत्तम उदाहरण है। इनके कार्यों के पीछे इनकी शिक्षा का महत्व था। संक्षेप में कह सकते हैं कि यदि नारी शिक्षित होगी तो वह अपने साथ ही परिवार, समाज व देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

सन्दर्भ–सूची

- अग्रवाल, बी0बी0 (2005) : आधुनिक भारतीय शिक्षा और समस्याएँ, आगरा विनोद पुस्तक मन्दिर।
- अग्रवाल, एस0के0 (2006): शिक्षा के तात्विक सिद्धान्त, मेरठ, राजेश पब्लिशिंग हाउस।
- आचार्य, डॉ० हेमलता (2015)– "भारत में सामाजिक प्रान्त के पथ–प्रदर्शक ज्योतिबाफुले", प्रथम संस्करण सम्यक प्रकाशन, दिल्ली।
- खुराना, के0एल0 – मॉडेम इंडियन, 2002 लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा–3.
- तिलक, रजनी (2017). "सावित्रीबाई फुले रचना समग्र, द मार्जिनलाइन्ड पब्लिकेशन, दिल्ली, पेज 98
- दुबे, एस0एन0 (2006): भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्याएँ, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन.
- धमाले, डी. के. (2018). "सावित्रीबाई फुले : महिला शिक्षा की अग्रदूत, भारत एशियन जर्नल आफ़ मल्टीडा य मेंशनल रिसर्च /7 (2).13–19
- भटनागर, ए0वी0 (2007) : भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास, मेरठ, आर०एल० बुक डिपो.

- मिश्रा, डॉ० प्रीति (2001)– "हिन्दू महिलाओं के जीवन में धर्म का महत्व, आदित्य पब्लिशर्स, बीना, मध्य प्रदेश।
- मेघवाल, डॉ० कुसुम (2010) – "भारतीय नारी के उद्धारक" : बाबा साहेब डॉ० बी०आर० अम्बेडकर", तृतीय संस्करण, सम्यक् प्रकाशन, दिल्ली।
- मृदुला राय नीता सिंह (2011) शिक्षक–शिक्षा शोध पत्रिका अंक 5(4), पृ0सं0–35–40.
- रश्मि (2022)."भारतीय शिक्षा प्रणाली में सावित्रीबाई फुले का दार्शनिक दृष्टिकोण :एक आलोचनात्मक विश्लेषण,, IJIEMR vol. 11 issue 12 Dec- 2022 page -1928–1934.
- राय, विनीत, रीता (2018). "फर्स्ट इण्डियन वुमन टीचर सावित्रीबाई फुले : बायोग्राफी आफ़ सावित्रीबाई फुले,, एजुकेशन पब्लिशिका, नई दिल्ली, page–51–53
- वर्ष 2005–06 विश्वविद्यालय अनुदान आयोग–प्रतिवेदन प्रकाशक– विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली।
- सरिता देवी और संगीता चौहान (2020). "सावित्रीबाई फुले के स्त्री शिक्षा से Protected विचारों का विश्लेषनात्मक अध्ययन,, IJAR 2020 : 6(8) : 408–411
- शिक्षक शिक्षा शोध पत्रिका अंक 02 (1), 2008 पृ०सं० 73–75
- शिक्षक शिक्षा शोध पत्रिका, अंक–6(1) 2012 पृ0–10.
- शिक्षक–शिक्षा शोध–पत्रिका संपादक डॉ० करुणेश कुमार तिवारी, अंग 3 (4) 2009.
- श्रीमती शुचि अरोरा (2022). "सावित्रीबाई फुले का महिला शिक्षा और समाज – सुधार में योगदान,, IJNRD volume 7, Issue 1Jaunary 2022.97–99
- www.wikipedia.com